जागरण विशेष

# कैंसर पीड़ित बच्चों के 'नए घर' में माता-पिता को भी मिला आश्रय

## नोएडा में उपचाररत दूसरे प्रदेशों के बाल रोगियों संग अभिभावकों के रहने-खाने की निश्शुल्क व्यवस्था

मोहम्मद बिलाल ● नोएडा

बिहार के मोतिहारी की सीमा (बदला हुआ नाम) बताती हैं कि आठ माह पहले एम्स दिल्ली में डाक्टरों ने कहा कि उनके पांच वर्षीय बच्चे को ल्यूकेमिया (रक्त कैंसर) है, इलाज लंबा चलेगा। कीमोथेरेपी करानी होगी। सरकार से आर्थिक मदद भी मिल गई, लेकिन लंबे समय तक दिल्ली में रहकर उपचार कराना कठिन था। डाक्टर से पीड़ा साझा की तो उन्होंने बताया कि नोएडा में एक केंद्र है जो उपचार पूरा होने तक माता-पिता को कैंसर पीड़ित बच्चे के साथ रहने-खाने की निश्शुल्क सुविधा देता है, तब यहां इलाज कराने का मनोबल मिला।

**उपचार हुआ सुगम:** यह कहानी सीमा ही नहीं, नोएडा के सेक्टर-26 स्थित सेंट ज्यूड इंडिया चाइल्ड केयर सेंटर में 42 कैंसर पीड़ित बच्चों के साथ रह रहे अभिभावकों की भी है। केवल घर से दूर घर ही नहीं, भोजन और आवागमन की सुविधा भी मिलने से दूसरे प्रदेशों से आए माता-पिता की चिंता कम हुई है और बच्चे कैंसर को हंसते-खेलते मात दे रहे हैं।

### वच्चों की शिक्षा व आवागमन निश्शुल्क

नोएडा स्थित सेंट ज्यूड इंडिया चाइल्ड केयर सेंटर में कैंसर पीड़ित बच्चों को पोषणयुक्त आहार के अलावा अस्पताल आने-जाने के लिए बस, बर्तन और राशन के साथ रसोई, स्नान गृह, खेलने की जगह, खिलौनों की व्यवस्था है। बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था भी है। अभिभावकों को सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, पेंटिंग, क्राफ्ट आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। ताकि वे इस अवधि में चाहें तो आय अर्जन भी कर सकते हैं। संस्था को देश के बड़े कारपोरेट घरानों से सहयोग मिलता है। नेपाल से आई विमला बताती हैं कि बार-बार दिल्ली आकर इलाज कराना आसान नहीं था। किराये पर कमरे बहुत महंगे थे। इस सेंटर से सुविधा मिली है।

नोएडा स्थित सेंट ज्यूड इंडिया चाइल्ड केयर सेंटर में कैंसर पीड़ित बच्चे संग दीपक में रंग भरती महिला ● जागरण

**आर्थिक बोझ से राहत:** नोएडा के पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट आफ चाइल्ड हेल्थ में पीडियाट्रिक हिमेटोलाजी एवं आंकोलाजी विभाग की प्रमुख डा. नीता राधाकृष्णन बताती हैं कि चिकित्सा संस्थान में उत्तर प्रदेश के पश्चिम और पूर्वांचल के जिलों, बिहार, बंगाल, झारखंड, हरियाणा, राजस्थान के अलावा पड़ोसी देश नेपाल तक से कैंसर पीड़ित बच्चे उपचार के लिए आते हैं। अधिकांश बच्चों का उपचार एक वर्ष से भी अधिक समय तक चलता है। इलाज के बाद बच्चों को पांच वर्ष तक फालोअप के लिए रखा जाता है। ऐसे में आर्थिक बोझ के तले दबे स्वजन के लिए नोएडा या किसी अन्य शहर में किराये पर घर लेकर उपचार कराना कठिन होता है। इस कारण कई बार स्वजन इलाज में सरकारी आर्थिक मदद के बाद भी आगे नहीं आते हैं। सेंट ज्यूड इंडिया चाइल्ड केयर संस्था ऐसे ही बच्चों और माता-पिता की मदद करती है।

**सरकारी अस्पताल के मरीजों के लिए सुविधा:** संस्था से जुड़े डा. शेखर कश्यप बताते हैं कि वर्ष 2013 में नोएडा में कैंसर पीड़ित बच्चों के लिए सेंटर खोला गया था। इसमें केवल सरकारी अस्पताल के आंकोलाजी विभाग के डाक्टर की सिफारिश पर कैंसर पीड़ित बच्चों के साथ अभिभावकों को आवास की सुविधा दी जाती है।

### देश में 42 केंद्रों पर है सुविधा

सेंट ज्यूड इंडिया चाइल्ड केयर संस्था के सीईओ अनिल नायर बताते हैं कि वर्ष 2006 में मुंबई में पहले सेंटर की स्थापना हुई थी। अब मुंबई में 20, दिल्ली एनसीआर में पांच, जयपुर, कोलकाता में तीन-तीन, वाराणसी, चेन्नई, गुवाहाटी, वेल्लोर में दो-दो और हैदराबाद, मुजफ्फरपुर व विशाखापटनम में एक-एक सेंटर है। 6,640 बच्चे और स्वजन इस सुविधा का लाभ उठा चुके हैं।

अतिरिक्त समग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।